निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत

इलियट के समीक्षा सिद्धांतों में निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना उनका परम्परा विषयक विचार। निर्वैयक्तिकता को Impersonal Theory of Poetry कहा जाता है। उन पर इस सम्बन्ध में एज़रा पाउण्ड के विचारों का प्रभाव परिलक्षित होता है। निर्वैयक्तिक प्रज्ञा उन्हीं की मान्यता है। एज़रा पाउण्ड ने यह माना है कि कवि वैज्ञानिक की तरह ही निर्वैयक्तिक एवं वस्तुनिष्ठ होता है। कवि का कार्य आत्मनिरपेक्ष होता है। इलियट अनेकता में एकता में बाँधने के लिए परम्परा को आवश्यक मानते हैं। इस तरह साहित्य में आत्मनिष्ठता पर नियंत्रण हो कर वस्तुनिष्ठता की प्रतिष्ठा हो जाती है।

इलियट ने कला को भी निर्वैयक्तिक घोषित किया है वे काव्य के स्वरूप पर विचार करते हुए व्यक्तित्व एवं कवि-मन को केवल एक 'माध्यम' मानते हैं। काव्य की प्रक्रिया, उनके अनुसार, पुनः स्मरण नहीं है, बल्कि एकाग्रता से सम्बन्धित है वे काव्य को इसी एकाग्रता का प्रतिफलन मानते हैं और मानते हैं कि काव्य-रचना सायास नहीं, बिना परिश्रम के हो जाती है। इसीलिए वे कहते हैं कि "कवि व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं करता है, अपितु वह विशिष्ट माध्यम मात्र है।"

एक वैज्ञानिक प्रक्रिया का उदाहरण देते हुए इलियट ने काव्य की रचना-प्रक्रिया को समझाया है। ऑक्सजीन और सल्फर आयोडाइड के कक्ष में यदि प्लेटिनम का तार डाल दिया जाए तो ऑक्सीजन और सल्फर डायोक्साइड मिलाकर सल्फर एसिड बन जाते हैं, लेकिन प्लेटिनम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और न एसिड में प्लेटिनम का कोई चिह्न दिखाई देता है। कवि का मन भी प्लेटिनम का तार है। व्यक्तिगत भावों की कला अभिव्यक्ति नहीं है, वरन् उससे पलायन का नाम कला है। कलाकार की प्रगति आत्मोत्सर्ग तथा व्यक्तित्व का निरंतर निर्वापन है।

कलाकार की दो भूमिकाएँ होती हैं—वह परम्परा से कुछ लेता है और परम्परा को कुछ देता है। इस प्रक्रिया से परम्परा में लेने के लिए कलाकार को आत्म-अवसान (व्यक्तित्व का विलय) या आत्म-त्याग करना पड़ता है। इलियट के शब्दों में—"The progress of an artist is a continual self-sacrifice, a continual extinction of personality."

अर्थात् इसे यों कहेंगे कि कलाकार की उन्नति का आधार व्यक्तित्व-विरहित होना और व्यक्तित्व का परित्याग ही है। कला के क्षेत्र में यह प्रक्रिया—निर्वैयक्तिकरण (Depersonalisation) की प्रक्रिया कहलाती है। इसमें कलाकार के व्यक्तित्व का लगातार अवसान होता है।

यहीं इलियट ने एक और महत्त्व की बात कही है। वे कहते हैं कि परम्परा से प्राप्त तत्त्वों का सृजन में प्रयोग अर्थात् सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से आए तत्वों का प्रयोग, कवि या कलाकार के वैयक्तिक संयोगों को नियंत्रित करता है। श्रेष्ठ काव्य का सृजन ऐसी स्थिति में ही सम्भव है। इसी में कलाकार के व्यक्तित्व का बलिदान

निहित है। वे एक स्थान पर कहते हैं कि "व्यक्तिगत भावों की अभिव्यक्ति कला नहीं है, बल्कि उसमें व्यक्तिगत भावों का पलायन कला है।" "Poetry is not a tuming loose of emotion, but on escape from emotion, it is not expession of personality, bout and escape from personality."

अतः स्पष्ट है कि इलियट काव्य में कवि-व्यक्तित्व को महत्त्व नहीं देते, व्यक्तित्व के विलय को महत्त्व देते हैं। इससे भी आगे बढ़कर वे यह स्थापित करते हैं कि कविता इसलिए महान् नहीं होती, क्योंकि उसमें कवि-व्यक्तित्व का आरोपण है अथवा कवि ने उसमें कोई महान् वैयक्तिक संदेश दिया है, महान, उद्भावना की है, वरन् कविता इसलिए महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि उसमें रचनाकार का वह निस्पृह मस्तिष्क कार्यरत होता है जो विशिष्ट एवं विभिन्न भावनाओं को स्वच्छंदतापूर्वक बिना किसी पूर्वग्रह अथव दुराग्रह के मिश्रण करके एक नवीन सृजन करता है।"

किसी भी रचना की इसी निर्वैयक्तिकता, निष्पृहता एवं तटस्थता को महत्वपूर्ण मानने के कारण ही उन्होंने लिखा है, "कलाकार जितना अधिक पूर्ण होगा, उसके सृजन-संलग्न मन में पृथकत्व होगा।" (The more perfect the artist, the more complete separate in him will be the man who suffers and the mind which creats."

वैयक्तिकता का आशय यह है कि कवि यह मानकर चलता है कि मैं रचना करता हूँ। इस स्थिति में वह अपने अंतर्मन को प्रकट करता है, परंतु सृजन प्रक्रिया के क्षणों में उसे इस बात का बोध नहीं रहता है कि वह सृजन क्रिया के मध्य है। आत्म-विस्मृति की दशा में उसकी वैयक्तिक चेतना तिरोहित हो जानी चाहिए। इसलिए इस स्थिति को इलियट यह मानते हैं कि कवि मध्यस्थ होता है, एक माध्यम-भर उसके निजी संवेग मात्र माध्यम का कार्य कर सकते हैं। उन्हें वे 'पदार्थ' मानते हैं। इस प्रक्रिया को वे रसायन विज्ञान की उत्प्रेरण की क्रिया से भी समझाते हैं। वे कहते हैं कि जो कार्य विज्ञान में उत्प्रेरक (कैटेलिटिक एजेंट) करता है, वही कार्य काव्य की रचना-प्रक्रिया में वैयक्तिक संवेगों का है।

इलियट ने निर्वैयक्तिकता के दो रूप माने हैं–

(i) प्राकृतिक, जो कुशल शिल्पी मात्र के लिए होती है,

(ii) प्रौढ़ कलाकारों द्वारा उपलब्ध।

उनकी मान्यता है कि "प्रौढ़ कवि का वैयक्तिक अनुभव-क्षेत्र भी निर्वैयक्तिक होता है।"

इस सिद्धान्त के अनुसार कविता का जीवन स्वतंत्र होता है। वह उपयुक्त माध्यम अर्थात् कवि-मन और कवि-मस्तिष्क पाकर स्वयमेव अवतरित हो जाती है। अर्थात् कवि कविता को लिखता नहीं है, बल्कि कविता स्वतः ही कवि के माध्यम से

शब्द-विधान-द्वारा कागज पर उतर आती है। यह रच जाती है, रची नहीं जाती। उत्पन्न हो जाती है, उत्पन्न की नहीं जाती। यह एक कला-प्रक्रिया है। इस दृष्टि से इलियट यह मानते हैं कि भावों की अपेक्षा कला-प्रक्रिया अधिक महत्त्व रखती है, जिसमें कवि का सन्निवेश नहीं होता।

एक स्थल पर इलियट ने यह भी कहा है कि वास्तव में जिनके पास व्यक्तित्व तथा भाव हैं, वे ही यह जानने में सफल होते हैं कि अपने व्यक्तित्व और भावों से पलायन करने का क्या अर्थ है। वे यह भी कहते हैं कि,"जो व्यक्ति कवि होता है, उसके व्यक्तित्व के दो अंश होते हैं–एक वह जो वास्तविक भावों का भोक्ता होता हैं, और दूसरा वह, जो कविता के अवतरण का माध्यम होता है।"

यह भी कि, "कवि के मस्तिष्क पर जो तत्त्व मिलते हैं, वे दो प्रकार के होते हैं–वास्तविक जीवन के भाव और कविगत भाव। काव्य रचना का प्रभाव पाठकों अथवा दर्शकों पर कला के अतिरिक्त वस्तुओं के प्रभाव से भिन्न होता है। कला का प्रभाव केवल एक वास्तविक भाव होता है अथवा अनेक भावों से निर्मित हो सकता है। विशिष्ट शब्दों, वाक्यांशों अथवा बिम्बों में कवि के लिए निहित विविध कलागत अनुभूतियाँ अन्तिम उपलब्धि के निमित्त उसके साथ जोड़ी जा सकती हैं अथवा महान कविता किसी भी वास्तविक भाव के प्रत्यक्ष उपयोग के बिना भी निर्मित हो सकती है, यह केवल कलागत अनुभूतियों द्वारा निर्मित होती है"

अर्थात् यह कह लें कि इलियट के अनुसार कविता स्थिति के द्वारा उत्पन्न वास्तविक भाव की निर्मिति है, किन्तु उसका प्रभाव विवरण की अत्यधिक मिश्रितता-द्वारा उत्पन्न होता है।

इस संदर्भ में इलियट का एक भाषण उद्धृत करना भी अप्रासंगिक नहीं होगा, जिसमें उन्होंने कविता के तीन स्वरों की चर्चा की है। उन्होंने समझाया था कि कविता के तीन स्वर होते हैं। प्रथम स्वर वह है, जिसमें कवि अपने आप से बातें करता है। द्वितीय स्वर वह है, जिसमें कवि अन्य (श्रोताओं) से बातें करता है। तृतीय स्वर में कवि स्वयं वक्ता न होकर पात्रों के माध्यम से बोलता है। प्रथम स्वर में कवि का लक्ष्य सम्प्रेषण (अर्थात् दूसरों तक अपने भाव पहुँचाना) नहीं होता। वह तो एक प्रकार के भाव से व्यथित रहता है और अपनी बात कहकर इस व्यथा से मुक्त हो जाना चाहता है। इस प्रकार की कविता में आंतरिक वस्तु अपना रूपाकार स्वयं निर्मित करने की ओर अग्रसर होती है। अतः वस्तु और रूप का विकास साथ-साथ होता चलता है। यही है, "कविता के स्वयं अवतरित" हो जाने की व्याख्या। ऐसी स्थिति में 'कवि केवल माध्यम' होता है। दूसरे स्वर में कविता किसी सजग सामाजिक उद्देश्य के निमित्त लिखी जाती है। मनोरंजन अथवा उपदेश के लिए लिखा गया साहित्य व्यंग्य

काव्य, नीति काव्य इसी श्रेणी में आते हैं। यही स्वर महाकाव्यों में भी प्रमुख होता है। तीसरे स्वर के अंतर्गत नाटक आते हैं। इलियट दूसरे और तीसरे स्वरों की रचनाओं को अचेतनावस्था से निःसृत नहीं मानते हैं। इन स्वरों से सृजित रचनाओं में रचनाकार पूरी तरह सजग रहता है और अपने व्यक्तित्व से कृति का निर्माण करता है। वह इसमें स्वव्यक्तित्व से पलायन नहीं करता, व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

एक सम्यक् स्थिति यह है कि रचना में तीनों स्वरों की परस्पर संगति रहे।

अन्ततः यह कि निर्वैयक्तिकता वस्तुनिष्ठ समीकरण है। फिर भी इलियट आत्मनिष्ठता की सर्वथा अवहेलना नहीं करते। काव्यास्वाद के लिए दोनों आवश्यक हैं।

प्रो० हरिमोहन